

## सुमनमुनि पद्महर्षी ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०२०२७)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

संपादकीय

प्रस्तावना

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – वन्दन-अभिनन्दन

गद्य विभाग

आप हमारी भुजा हैं -----	१
श्रमण संस्कृति के गौरवशाली सन्त -----	१
वन्दन-अभिनन्दन -----	२
शुभाशीर्वचनम् -----	२
मेरा हार्दिक आशीष -----	३
गौरवास्पदमदीयम् -----	३
मंगल कामना -----	३
स्नेह सुमनाञ्जलि -----	४
स्पष्टवक्ता एवं अनुशासन प्रिय -----	४
महापुरुष -----	४
मेरी आस्था के देवता -----	४
विराट् व्यक्तित्व के धनी -----	५
गुणों के धारक महापुरुष -----	७
बहुमुखी व्यक्तित्व -----	८
शांतिदूत -----	८
आन्तरिक शुभाशंषा -----	९
मेरी अनन्त आस्था के केन्द्र-पूज्य गुरुदेव -----	१०
कुछ कर गुजरने की तमन्ना -----	१२
गुजरात को भी पावन करें -----	१३
फैले यश सौरभ, दिन दूना, रात चौगुना -----	१३
उदारचेता श्रमण -----	१४
गुरुदेव सुध लो अपने वतन की -----	१४
यथानाम तथा गुण सम्पन्न मुनिराज -----	१४
सुमन सुरभि -----	१५
दिव्य गुणों के धनी -----	१६
वात्सल्यमूर्ति -----	१७

वीर प्रभु के अमर सेनानी श्रु सुमन मुनि जी -----	१७
जीवन शिल्पी, प्रबुद्ध कलाकार, कुशल चितेरे -----	१७
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी -----	१९
ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के प्रतीक -----	२०
दिव्यविभूति -----	२१
जैन जगत् के चमकते सितारे -----	२१
जैन जगत् के गौरवशाली सन्त -----	२२
संयमनिष्ठ मुनिराज -----	२२
अभिनन्दनाञ्जलि -----	२३
धर्म दिवाकर -----	२३
चिरायु जीवन की कामना -----	२३
धन्य है आपकी अद्वितीय साधना -----	२४
समन्वयवादी विचारों के धनी -----	२५
गिरा अनयन नयन बिनु वाणी -----	२५
गुणों के सागर -----	२७
प्राकृत भाषा प्रचारकौ -----	२८
ज्ञान-दर्शन-चारित्र की त्रिपथगा -----	२९
संतप्रवर-सुमन मुनिवर -----	२९
निष्कलंक व्यक्तित्व -----	३३
जैन दर्शन के प्रकांड पंडित-----	३३
प्रज्ञामहर्षि-श्री सुमनमुनि जी महाराज-----	३४
चलता फिरता मसीहा -----	३७
ज्ञान-सागर से निकला अमृत -----	३८
सर्वतोभद्र व्यक्तित्व के धनी -----	४१
चरण कमलों में वनदन -----	४१
उद्धोधन के माध्यम से -----	४२
चरित्रात्मा -----	४३
दीर्घ अनुभवी स्पष्टवक्ता -----	४४
भीष्म पितामह-से -----	४४
महामना संत -----	४४
गरिमा-महिमा की बात -----	४५
पंडितरत्न मुनि श्री सुमनकुमारी जम. एक संस्मरण -----	४५
सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय -----	४६
अर्पित है मंगलमयी भावना -----	४७
यथनाम तथागुण -----	४८

गुरुदेव मेरे, मैं उनका -----	४८
सुरभित हो ज्यों चन्दन -----	४८
अनुभव शास्त्र के धनी -----	४९
अनंत उपकारी गुरुदेव -----	४९
आध्यात्मिक साधना के प्रभावी उद्घोषक -----	५०
संयम के महासाधक -----	५५
विराट् व्यक्तित्व के धनी -----	५६
माधुर्य, सरलता, सद्भावना के प्रतीक -----	५९
देदीप्यमान जीवन -----	६०
प्रभाव-गुरुदेव के उपदेश का -----	६०
अभिनन्दन-संयमी जीवन का -----	६१
जैन समाज के ज्वाजल्यमान नक्षत्र -----	६१
एक आदर्श महापुरुष-----	६१
श्रमण संघ की शान -----	६२
मेरे विचार -----	६३
नई पीढी के मार्दर्शक -----	६४
करुणाशील निर्ग्रन्थ -----	६४
ज्ञानी एवं दार्शनिक महापुरुष -----	६५
जिनवाणी के सफल जादूगर -----	६६
सरस्वती पुत्र-मुनि श्री समुमनकुमारजी -----	६७
श्रमणसंघ का अद्वितीय सुमन -----	६८
महावीर-सिद्धआंतो के कुशल संवाहक संत -----	६९
गुरु शुक्ल के सच्चे उत्तराधिकारी -----	६९
अविस्मरणीय हैं और रहेंगे -----	७०
सुमना: सुमना: -----	७१
सुमन-सौरभ-----	७३
सरलता साधुता के प्रतीक -----	७३
संयम का अभिनन्दन-----	७३
साधना सम्पन्न महानयोगी -----	७४
लोक में आलोक के प्रतीक -----	७४
प्रकाश पुरुष गुरुदेव -----	७५
स्व पर कल्याण रत्न गुरुदेव -----	७५
अभिनन्दन एवं मंगल कामना -----	७५
एक बहुआयामी व्यक्तित्व -----	७६
मृदु-हृदय मुनिराज -----	७७

संयम को नमन -----	७७
पूज्य गुरुदेव का चमत्कारी व्यक्तित्व -----	७८
सामाजिक चेतना के संवाहक-----	७८
शत-शत अभिनन्दन -----	७९
वीतराग वाणी के महान् व्याख्याता -----	७९
अभिनन्दन एवं मंगलकामना -----	८०
यशस्वी मुनि पुङ्गव -----	८०
Sri Suman Muniji -----	81
<b>पद्य विभाग</b>	
यशोगानम् -----	१
मेरे मन को सुमन बना दो -----	१
जिनशासन सिणगार -----	१
सुमन-गौरव-गाथा -----	२
श्रमणरत्न श्री सुमनमुनि -----	५
श्रमणसंघ की ढाल, हृदय से विशाल -----	५
कितने सच्चे, कितने अच्छे मेरे गुरुवर -----	६
सुमन की सौरभ -----	६
सब ही तदेते बधाई -----	७
जय-जय सुमनमुनि गुणवान -----	७
युग-युग जिओ गुरुवर -----	८
शांति का बिगुल बजाते हैं -----	९
सुमन सौरभ -----	९
संयम की उज्ज्वल ज्योति -----	९
ज्ञान प्रकाश फैलायो संघ में-----	१०
शुभ दिन आज है -----	१०
मुनि जीवन की शान -----	११
श्रमण संघ की शान -----	११
विरागी का विरागाभिनन्दन -----	१२
सुमणत्थुई -----	१२
लाखों लाख बधाई -----	१३
श्रद्धा-पुष्प -----	१४
मंजुल व्यक्तित्व विशाल -----	१५
ऐसा वरदान दे दो गुरुवर -----	१५
भक्ति के सुमन अर्पण करू मैं -----	१६
हार्दिक वन्दन-अभिनन्दन -----	१६

गुरुवर सुमन मुनि जी -----	१६
द्वितीय खण्ड-परम्परा	
श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रमण-परंपरा -----	१
पंजाब श्रमणसंघ की आचार्य परम्परा -----	१७
अ.भा.स्था. वर्धमान श्रमणसंघ के आचार्यों का संक्षिप्त जीवन परिचय -----	३१
प्रवरर्तक पं.र. श्री शुक्लचन्द्रजी महाराज -----	३५
गुरुदेव पं. रत्न श्री महेन्द्रकुमारजी महाराज -----	४७
श्रद्धेय चरितनायक गुरुदेव का शिष्य परिवार -----	५१
गुरुदेव श्री शुक्लचन्द्रजी महाराज के शिष्य रत्न -----	५३
पंजाब श्रमणी परंपरा -----	५८
तृतीय खण्ड-सर्वतोमुखी व्यक्तित्व	
सर्वतोमुखी व्यक्तित्व -----	१-११२
चतुर्थ खण्ड-सुमन साहित्य एक अवलोकन	
श्री सुमनमुनि जी की साहित्य साधना-----	१
मत अभिमत -----	२०
श्री सुमनमुनि जी का सर्जनात्मक साहित्य -----	२५
एक लघु साक्षात्कार -----	३०
सुमन वचनामृत -----	३२
पंचम खण्ड-जैन संस्कृति का आलोक	
हिन्दी विभाग	
अनेकान्त-समन्वय का आधार – डॉ. प्रेम सुमन जैन -----	१
भगवान् महावीर के जीवन सूत्र – श्रीचन्द्र सुराना -----	७
श्रमण संस्कृति के संरक्षण में चातुर्मास की सार्थक परम्परा – डॉ. राजाराम जैन -----	१२
जैन एकता-आधार और विस्तार – आचार्य विजय नित्यानंदसूरि -----	१६
सामाजिक समरसता के प्रणेता तीर्थंकर महावीर – डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन -----	२१
अहिंसा परमो धर्म: – स्वामी ब्रह्मेशानन्द -----	२४
जैन कर्म सिद्धान्त-नामकर्म के विशेष संदर्भ में – डॉ. फूलचन्द्र जैन -----	३४
जैन आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी या शौरसेनी – डॉ. सागरमल जैन -----	४३
जैन साधना और ध्यान – डॉ. छगनलाल शास्त्री -----	६२
साधना और सेवा का महासम्बन्ध – डॉ. सागरमल जैन -----	७२
कर्म सिद्धान्त की वैज्ञानिकता – डॉ. जयन्तीलाल जैन -----	७८
विश्व का प्राचीनतम धर्म – श्री मेघराज जैन -----	८३
जैन साधना एवं योग के क्षेत्र में आचार्य हरिभद्र सूरि... – श्री महेन्द्रकुमार रांकावत -----	८८
कषाय क्रोध तत्त्व – प्रो. कल्याणमल लोढा -----	९४
ध्यान और अनुभूति – डॉ. अशोक जैन -----	१११

तमिलनाडु में जैन धर्म – पं. श्री मल्लीनाथ जैन -----	११५
श्रमण संस्कृति का हृदय एवं मस्तिष्क – डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन -----	१२६
आत्म साक्षात्कार की कला-ध्यान – आचार्य शिवमुनी -----	१३१
जैन संस्कृति में नारी का महत्व – साध्वी डॉ. धर्मशिलाश्रीजी -----	१३६
प्राचीन जैन हिंदी साहित्य में संत स्तुति – साध्वी विजयश्रीजी -----	१४५
धर्म साधना का मूलाधार-समत्वयोग – श्री विनोद मुनि -----	१५४
जैनागम पर्यावरण संरक्षण – श्री कन्हैयालाल लोढा -----	१६३
ध्यान-स्वरूप और चिंतन – श्री रमेश मुनि -----	१७२
तीर्थंकर पार्श्वनाथ का लोकव्यापी व्यक्तित्व और चिंतन – डॉ. फूलचन्द्र जैन -----	१७८
जैनागम में भारतीय शिक्षा के मूल्य – श्री दुलीचंद जैन -----	१८३

#### English Section

A Brief Account of Jaina Tamil Literature – S. Krishnachand Choradia-----	1
The Uniqueness of Jain Spirituality – Prof. Ramjee Singh-----	9
Studies on Biology In Tatvartha Sutra – Prof. N. L. Jain -----	17
Mathematical Philosophy in the Jaina School of Thought – Prof. L. C. Jain, S. K. Jain -----	35